International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 21-11-2019; Accepted: 22-12-2019
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 1; January 2020; Page No. 67-68

हिन्दी के प्रतिनिधि छायावादी कवि

डॉ. तबस्सुम खान
श्री सत्य साई प्रोधोगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्व विधालय पचामा, सिहोर, मध्य प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

जयशंकर प्रसाद – आधुनिक हिन्दी साहित्य के क्षेत्र मई दिवेदी युग की इतिव्रतात्मक नीतिपरकता अधिक हो गई थी एसी स्थिति मे सूक्षम भावानुगामिनी कविता धारा प्रवाहित हुई, जिसमे प्राचीनता एवं रुड़ीवादिता के विद्रोह का तीव्र स्वर भरा हुआ था, जो अपनी रहस्यात्मक भावना,लक्षणिक एवं प्रतिकात्मकता पदावली,छितरोपमा भाषा, कोमल एवं रमणीय कल्पना आदि के कारण एक नूतन युग का संदेश दे रही है |थी तथा जिसमे सामूहिकता के स्थान पर भावुकता,स्थूलता के स्थान पीआर सूक्षमता, अमिधा प्रधान,इटिवरततात्मकता के स्थान पर स्वछंदता का प्रयोग किया गया |एसी कविता को पहले अस्पस्ट, गुप्त ।गूढ,छायामयी सुषक विचारो का नीरस, अमानवीय साठे आदि कहकर तिरस्कार की द्रस्टि से देखा गया था |एस तरह स्वतंत्र एवं व्यक्तिक सूक्ष्म भावो से रमणीय सुसज्जित,मानवता के प्रेम से औतप्रोत तथा लक्षिणाक्ता एवं प्रतिकताम्क्ता से परिपूर्ण कोमलकान्त पदावली मे जिस नवीन कविताधारा का विकास हुआ,,वही छायावादी काव्य के नाम से अभिहित हुई |

छायावाद मानव जीवन सोंदर्य और प्रकर्ति को आत्मा का अभिन्न स्वरूप मानता है |

मानने वाले दिवतीय वर्ग के समालोचको मे से डॉ नगेंद्र,डॉ नगेंद्र ने छायावादी कविता को मूलतः श्रंगारिक माना है |जिसका जन्म व्यक्तिक कुंठाओ से हुआ है मन की वे ही कुंठित वासनाए प्रक्रतिक प्रतिको द्वारा यहा प्रकट होती है| और यथार्थ पर अंतेर्मुखी द्रस्टि डालते हुए उसको वायवी अथवा अतींद्रिय देने की प्रवत्ति ही छायावाद की मूल प्रवर्ति है|

कामायनी में छायावादी के समस्त गुण दोषो का स्वरूप

कामायनी आधुनिक युग की श् सर्वोत्क्रस्त रचना है| छायावादी युग की चरम उपलब्धि और प्रसाद के कवि जीवन की परम सिधही है|एसमे मानवता की उस चिरंतन पुकार को वाणी प्रदान की गई है| जो निराश भाय ट्रस्ट एवं भ्रमित जीवो का पाठ प्रदर्शन केआर रही है |चिर्दग्ध दुखी वसुधा को शाश्वत शांति एवं आलोकिक सुख प्राप्ति की आशा बांध रही है और सुसंगठित चिरंतन शक्ति के विश्रंखलित हो जाने से पराजित मानवता को विजयनी बनती हुई उसे अखंड आनंद प्राप्ति संदेश दे रही है|

Þ जीवन धारा सुंदर प्रवाह
सत,सतत प्रकाश,सुखद अथाह Þ |

इस प्रकार जयशंकर प्रसाद ने छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्षम का विद्रोह कहा है |

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

आधुनिक युग मे हिन्दी काव्य का बहुमुखी विकास हुआ है| इस विकास की आओर उन्मुख होने के लिए कवियों की स्वछंद मनोव्रत्ति का आभास भारतेन्दु युग से ही मिल जाता है |दिवेदी युग मई आकार अवश्य स्वछंद मनोवरती का आभास मिलता है यह स्वछंद मनोवरतती सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन के साथ हिन्दी काव्य के क्षेत्र मे प्रकट हुई हे | निराला हिन्दी साहित्य के एसे युगांतकारी कवि है,जिनकी रचनाओ मे तत्कालीन मानव की पीड़ा ।परतंत्रता एवं परवशता के प्रति उत्पन्न तीव्र आक्रोश की ध्वनि सुनाई पड़ती है अन्याय एवं असमानता के प्रति प्रलयकारी विद्रोही की घोषणा सुनाई पड़ती है और विशमताओ,विभेदो एवं विपरीत परिस्थितियो से संघर्ष करने की तीव्र गर्जना सुनाई पड़ती है |ईएसए क्रांतिकारी कवि एक ओर अपनी ओजस्वी कविता द्वारा ज्वालामुखी का विस्फोट भी कर्ता है,तो दूसरी ओर नारी के दिव्य सोंदर्य की आलोकिक झांकी प्रस्तुत कर्ता हुआ प्रेम के मर्मस्पर्शी गीत भी गाता है| अतएव निराला के काव्य की विशेषताओ का अध्ययन करने के लिए अथवा निराला के काव्य सौषठ्व का अनुशीलन करने के लिए यह परम अवशयक है की उसकी अनुभूति एवं अभिव्यक्ति को प्रथक प्रथक देखने का प्रयास किया जाए |

निराला की अधिकान्त रचनाए मुक्तक है,जिनमे कवि के स्वतंत्र एवं स्वछंद विचार कहीं परंपरागत छंदो मे और कहीं सर्वथा उन्मुक्त एवं नवीन छंदो मे अभिव्यक्ति हुए है| वैसे निराला के विद्रोही विचार उन्मुक्त छंदो में ही अपनी गरीमा एवं महिमा के साथ प्रतिस्थित है परंतु निराला की प्रतिभा केवल मुक्तक रचनाओ तक ही सीमित है|

निराला की तीन प्रबंधात्मक रचनाए तीन है सरोज स्म्रती,राम की शक्ति पूजा और तुलसीदास | इनमे से सरोज स्म्रती लोक गीत है जिसमे कवि ने अपनी पुत्री सरोज के बाल्यकाल से लेकर म्रतुयु तक की घटनाओ का चित्रण किया है|

सुमित्रानंदन पंत

हिन्दी की नूतन काव्य धारा का श्रीगणेश छायावादी कविता से माना जाता है |हिन्दी मई छायावादी कविता का प्रारम्भ करने का श्रेय तो जयशंकर प्रसाद को है किन्तु छायावादी रचना शैली एवं छायावादी अनुभूति का प्रचार एवं प्रसार करने का श्रेय सुमित्रानंदन पंत जी को ही जाता है | पंत ने अपने क्षेत्र मई पदार्पण करते ही सर्वप्रथम अपने चरो ओर दिवेदिकालीन काव्याधरा के दर्शन किए थे जैसे प्रसाद पहले ब्रजभाषा मई कविताए किया करते थे फिर खड़ी बोली की ओर अग्रसर हुए वैसे ही पंत जी ने ब्रजभाषा की सहज काव्याकुंज गली मे कभी प्रवेश नहीं किया उनकी द्रष्टि माइबराजभाषा इतनी प्राचीन एवं प्रभावहीन भाषा हो चुकी थी की उसमे अपने मनोभाव को व्यक्त कर्ण समीचीन न था | इतना ही नहीं पंत ने छायावाद को जो गुरुता गंभीरता एवं नूतन अभिव्यंजना शक्ति प्रदान की उतना ही कार्य प्रगतिवाद के लिए भी किया है |प्रगतिवाद ने जैसे ही काव्य क्षेत्र मई पदार्पण किया,वैसे ही पंत ने अपना स्वर प्रदान किया|गति दी मधुर राग रागिनियों के द्वारा जन मानस तक उसके विचार को पाहुक्व्हने का कार्य किया |पंत जी के काव्य मई प्रक्रती प्रेम सर्वोपरि दिखाई देता है | कवि प्रक्रतिक सुषमा की और इतना आक्रास्ट हुआ की उसे चरो ओर प्रक्रती का सोंदर्य बिखरा हुआ दिखाई दिया और उस प्रक्रतिक सोंदर्य के प्रति कवि की तन्मयता,मोहकता एवं सवेदनशीलटा उतरोटर प्याद होती जाती है | अँग्रेजी के रोमांटिक कवियों की भांति वह एस सम्पूर्ण विशाव को गहन आश्चर्य की भावना से देखता है और प्रक्रती मे नूतन सोंदर्य से ओतप्रोत सुषमा के दर्शन करते है| पंत प्रक्रती के सुकुमार कवि है है |अपने आरंभिक जीवन से ही आपने प्रक्रती की प्रेरणा प्रपता की है

महादेवी वर्मा

संगीत की माधुरी से परिपूर्ण आत्मपरक काव्य को गीति काव्य कहते है| इस काव्य मई हृदय रथ मनोभाओ को संगीत की सुमधुर लय एवं तन के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है,यह अनुभूति प्रधान होता है और इसमे कोमल कल्पना, ललित भाव और मधुर काला की त्रिवेणी प्रवाहित होती है और ये त्रिवेणी प्रहवित होती है महादेवी का गीति सौसथव अद्भुत है इनकी कविताए गीति काव्य की सम्पूर्ण विशेषताओ से ओतप्रोत है| उसमे आत्माभिव्यक्ति है,आत्मानुभूति है,निश्छल हिरदाय के उद्गार है स्व्छंद भाव तरंगे है सहज स्वाभिव्यक्ति है,सहज संगीततमक है, अपनी एस विशेषता के कारण महादेवी जी का गीति काव्य सर्वाधिक प्रभावोत्पादक है एसिलिए आधुनिक युग की गीति लेखिका है|

महादेवी की विरहनुभूति

विरह प्रणय की कसौटी है,प्रेम की सात्विक अनुभूति है और प्रेमी हिरदाय की सुकुमार भावना है|विरह मानव जीवेन का चीर सहचर है विरह के बिना न प्रेम का पूर्ण परिपाक होता है ओर न प्रणय की पूर्णटा देखि जाती है विरह मानव जीवेन का सहचर है कीकी अनादिकाल से ही अन्याय भावो के साथ उपस्थित होकर चला आया है महादेवी की विरहनुभूति मे निम्न बाते समाहित है|

1. प्रेमवेदना की गहनता
2. करुणा की प्रधानता
3. नेसर्गिकता
4. नारी सुलभ सटविकता
5. अंतर्दशाओ की विविधता
6. विरह की अध्यात्मिकता
7. भक्ति की तन्मयता
8. विरह व्यथा की अजस्रता

एस प्रकार महादेवी जी हिन्दी छयवादी कविता की अमर श्रंगार है

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास i. ६६८
2. महादेवी का विवेचनात्मक गद्य ८६
3. रस्मीबंध २३
4. हिन्दी साहित्य बिसवी शताब्दी १४५
5. परेदर्शन २